Sumangalam Prabha
A peer reviewed (Refereed) & open access journal
RNI N0.- UPHIN/2009/31180
PP.No.: 07-11

ISSN: 2250-1894
Vol.-15, No.-IV, Issus-60
Year: Jan-Mar 2025

कुम्भ पर्व विमर्श

डॉ0 बिपिन कुमार
विषय विशेषज्ञ, ज्योतिर्विज्ञान विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ (उ0प्र0)

कुंभ पर्व अमृत प्राप्ति की कामना का महापर्व है। संसार की सारी सभ्यताएं और संस्कृतियां नदियों के तट पर बसीं। नदी प्राणिजगत का आधार रहा है। भारत की सनातन संस्कृति ने नदी के तट पर कुम्भ पर्व का आयोजन किया, वैदिक काल से लेकर ब्राह्मण काल, आरण्यक, उपनिषद, रामायण, महाभारत काल से लेकर इस 21वी सदी तक कुम्भ महापर्व अपनी लोकप्रियता बनाये हुए है। प्रस्तुत शोध प्रपत्र में कुम्भ के वैदिक आयाम से लेकर अधुनातन तक के भौतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, दार्शनिक पक्षों को प्रस्तुत किया गया है। अगले 100 से अधिक वर्षों तक के कुम्भ की तिथियां भी ग्रहगणित के द्वारा निकलाकर प्रस्तुत की जा रही है।

यह पर्व समुद्र मंथन की उस पौराणिक कथा से जुड़ा हुआ है, जिसमें देवताओं और असुरों ने अमृत प्राप्ति के लिए समुद्र का मंथन किया था। जब अमृत कलश लेकर भगवान धन्वंतरि प्रकट हुए, तो उसे प्राप्त करने के लिए देवताओं और असुरों में संघर्ष हुआ। इस दौरान अमृत की कुछ बूंदें पृथ्वी पर चार स्थानोंकृ हरिद्वार, प्रयागराज, उज्जैन और नासिककृपर गिरीं। इन्हीं स्थानों पर कुंभ मेले का आयोजन होता है। इसके समय निर्धारण का आधार गुरु सूर्य और चंद्रमा का गोचर है। तीर्थराज प्रयाग के महाकुम्भ पर्व 2025 में 66.30 करोड श्रद्धालु सम्मिलित हुए।इसमें कुल पौष पूर्णिमा, मकर संक्रांति का स्नान, मौनी अमावस्या, वसन्त पंचमी, माघी पूर्णिमा और महाशिवरात्रि स्नान होते है। कुम्भ महापर्व 2025 कुल 4 हजार हेक्टेयर में क्षेत्र में फैला था, इसमें 2750 सी सी टी वी कैमरा लगे थे, 1850 हेक्टेयर पार्किंग की व्यवस्था की गई थी। इसमें लगभग 66 करोड़ 30 लाख श्रद्धालु स्नान किए। गंगा और यमुना दोनों नदियों पर कुल मिलाकर 30 पांटून पुल बनाये गये थे। 1 लाख 60 हजार टेण्ट लगाये गये थे। उत्तर प्रदेश सरकार के विशेष प्रयास से कुल 12 किलोमीटर की लंबाई के घाट बनाए गए थे जिसमें श्रद्धालुओं ने डुबकी लगाई।

स्वच्छता सफ़ाई का ध्यान रखते हुए कुल 1 लाख 50 हजार टॉयलेट बनाये गये थे। रात्रि में प्रकाश के लिये 67 हजार स्ट्रीट लाइट लगाई गई थी। यातायात की सुविधा का ध्यान रखते हुए 400 किलोमीटर नई सड़क निर्माण किया गया था। मेला खर्च को ध्यान में रखते हुए 7 हजार 5 सौ करोड़ सरकार का बजट किया गया था।सुरक्षा सहायता हेतु 50 हजार सुरक्षा कर्मी लगाये गये थे। मौनी अमावस्या के दिन 8 करोड़ लोगों ने स्नान किया । कुम्भ महापर्व 2025 कुल 45 दिन का कार्यक्रम था, स्वच्छता सफ़ाई के लिए कुल 15 हजार स्वच्छता कर्मी लगाये गये थे। 2 हजार गंगा सेवा दूत लोगो का सहयोग कर रहे थे। इस कुम्भ महापर्व 2025 में 2विश्व रिकार्ड भी बने –'15 हजार से अधिक स्वच्छता कर्मियों ने एक साथ सफाई कार्य किया । गंगा पंडाल में 10 हजार से अधिक लोगों ने पंजो की छाप (हैण्ड पेण्ट प्रिंटिंग) का विश्वरिकॉर्ड बना ।

यह आध्यात्मिक वायुमण्डल गुरु सूर्य और चंद्रमा के गोचर पर आधारित होता है। यह व्यष्टि से समष्टि होने की ,व्यक्ति से समूह में होने की और तरंग से समुद्र होने की प्रवृति है । अकेले व्यक्तिगत साधना की तुलना में अनेक लोगों के साथ सामूहिक साधना में अधिक एकाग्रता रहती है । करोडो तरंगें मिलकर अनन्त ऊर्जा का एक सागर बनाती है । करोड़ों श्रद्धालु जो सामान्यतया संसार के विभिन्न स्थानों पर स्नान ध्यान जप दान और सत्संग करते हैं , कुम्भ में वही सब मिलकर एकसाथ एक मुहूर्त में एक स्थान पर इकट्ठे होकर स्नान ध्यान जप दान और सत्संग करते हैं। अकेले–अकेले अलग–अलग की गई साधना लघु आध्यात्मिक आभामण्डल का निर्माण करती है, लेकिन करोड़ों लोग एक साथ ,एक स्थान पर , एक मुहूर्त में इकट्ठा होकर की गई साधना विशालतम आध्यात्मिक आभामण्डल का निर्माण करती है, उसी आध्यात्मिक आभामण्डल का लाभ लेने का प्रयास कुंभ महापर्व है।

कुम्भ विश्व का प्राचीनतम और श्रेष्ठतम तीर्थपर्व और मेला है। सनातन धर्म मे चार आश्रम स्वीकृत है – धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। 'यतो+भ्युदयेनिःश्रेयशसिद्धिः स धर्मरू' कुम्भ में सम्मिलित होने से इहलोक में भौतिक उन्नति और परलोक में मुक्ति होती है। कुम्भ पर्व में सांसारिक अर्थ सिद्धि भी होती है। व्यापारिक कंपनियां अपने प्रचार प्रसार हेतु कुम्भ में आती हैं। कुम्भ मेले में आने वालो कि मनौतियां, कामनाएं भी पूर्ण होती है। श्रद्धालु अपनी मन कि इच्छाओं की पूर्ति के लिए स्नान–दान और सत्संग करने आता है। मानव जन्म का उद्देश्य जन्म मरण के बंधन से मुक्त होना है, भारत का श्रद्धालु सांसारिक जीवन से मोक्ष हेतु यहां आता है। कुम्भ मेले में सत्संग करने से मुक्ति प्राप्त होती है, मोक्ष मिलता है। इस प्रकार कुम्भ पर्व चार पुरुषार्थ की प्राप्ति का पुण्यस्थल है। सनातन धर्म परम्परा में चार आश्रम स्वीकृत है– ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास। कुम्भ पर्व पर

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

Sumangalam Prabha
A peer reviewed (Refereed) & open access journal
RNI N0.- UPHIN/2009/31180
ISSN: 2250-1894
Vol.-15, No.-IV, Issus-60
Year: Jan-Mar 2025

ब्रह्मचारियों को दीक्षा दी जाती है। गृहस्थ कुम्भ में स्नान , दान और सत्संग के द्वारा पापक्षय और पुण्यसंचय करते है।वानप्रस्थ आश्रम के लोग सत्संग में समय व्यतीत करते हैं । सन्यासी अपना निरपेक्ष प्रागनुभविक और इंद्रियातीत ज्ञान का प्रसार करने आते हैं। इस प्रकार कुम्भ चारों आश्रम का आधार है।

आदि शंकराचार्य ने इस पर्व को बृहदस्वरूप प्रदान किया था। तब से आधुनिक युग मे यह पर्व अपनी विशालता को बढ़ाता जा रहा है, महाकुम्भ पर्व 2025 में अब तक का सर्वाधिक जनसंख्या वाला मेला रहा।

कुम्भ का शाब्दिक अर्थ कं जलं उम्भति पूरयति अर्थात जल से सूखे और दुर्भिक्ष दूर करने वाला पात्र कुम्भ है। अन्य व्युत्पत्ति के अनुसार ष्कुरू पृथ्वीं उम्भ्यतेअनुगृह्यते यस्मिन् महात्मभिः तेषां हितोपदेशैश्च 'पृथ्वी के उपकार के लिए महात्माओं के संगम का स्थान कुम्भ है। यह व्यष्टि से समष्टि की अनुभूति है, अंश–अंश का अंशी से अद्वैत हो जाना कुम्भ है। यह व्यक्ति का समूह में हो जाने का प्रयास है।मैं से हम हो जाने की अभिलाषा है कुम्भ। 'तत्त्वमसि'(छान्दोग्य उपनिषद 6/8/7) की अपरोक्षानुभूति है कुम्भ। जीव का ब्रह्म से 'अभेद दर्शनं ज्ञानम्' की प्रतीति कुम्भ है।

वेद में कुल 28 बार कुम्भ शब्द आया है। ऋग्वेद के 10/89/7 में कुम्भ शब्द घट के लिए प्रयुक्त हुआ है। यजुर्वेद में कुम्भ शब्द पुरुष के लिए और कुम्भी शब्द स्त्री के लिए प्रयुक्त हुआ है–

कुम्भो वनिष्ठुर्जनिता शचीभिरॉयस्मिन्नग्रे योज्यां गर्भो अंतः
प्लाशिर्व्यक्तः शतधारः उत्सो दुहे न कुम्भी स्वधांपितृभ्यः ।।[1]

यहां आशय है कि कुम्भ के समान शौर्यादि गुणों से सम्पन्न शक्तिशाली पुरुष और स्त्री परिवार के वयोबृद्ध जनों का भरण पोषण करते हुए नए सन्तति का जन्म, विकास और संस्कारित करते हैं। अथर्ववेद में कुम्भ उत्सव का रूप ले चुका है–

पूर्णकुम्भोअधिकाल आहितस्तं वै पश्यामो बहुधा न सन्तः।।[2]

अर्थात पूर्णकुम्भ के महान उत्सव का पर्व आ गया है। उसे हम सभी समवेत होकर देख रहे हैं। पारस्कर गृह्यसूत्र में कुम्भ की पूजा की गई है–

त्वत्तोये कुम्भ तीर्थानि, देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः।[3]

अर्थात है कुम्भ तुम्हारे जल में सभी तीर्थ स्थित है, सभी देवता तुममे स्थित हैं, सभी प्राणी तुम्हारे अंदर बैठे हैं, सारे प्राणियों के प्राण भी तुम्हारे अंदर प्रतिष्ठित हैं। मनुस्मृति में कुम्भ शब्द घट परिमाण के अर्थ में प्रयुक्त है–

घृत कुम्भ वराहे तु तिल द्रोणां तुतित्तिरौ[4]

अर्थात वराह या सूकर मारने वाले को प्रायश्चित के लिए कुम्भ भरकर घी का दान करने चाहिए । अरुण स्मृति में गृहोपकरणों के दान में उदक कुम्भ का उल्लेख आया है–

गृहोपकरणान् सर्वान् गोमहिष्यादिभूषणान्
कण्डनी पेषणी चुल्हो उदककुम्भरू प्रमार्जिनी।।[5]

भरतमुनि के नाट्यशास्त्र में रंगमंच के मध्य में कुम्भ प्रतिष्ठित करने के लिए कहा गया है–

कुम्भं सलिलसम्पूर्णं पुष्पमाला पुरस्कृतम्
स्थापयेद् रंगमध्ये तु सुवर्णं चात्र दापयेत्।[6]

अर्थात जल से भरे कुम्भ को पुष्पमाला से अलंकृत करके ,सोना डालकर रंगमंच के मध्य में स्थापित करना चाहिये। भरतमुनि के नाट्यशास्त्र में ही समुद्र में अमृतमंथन का भी उल्लेख है।[7]

महाभारत 13/149/81 में कुम्भ शब्द शुद्धात्मा और विष्णु के पर्याय के रूप में प्रयुक्त है। भारतीय ज्योतिषशास्त्र में 11वीं राशि कुम्भ है जिसमे स्वामी शनि है , यह शनि की मूल त्रिकोण राशि भी है। सारावली के अनुसार ष्कुम्भरू कुम्भधरोष कुम्भ राशि का स्वरूप– एक मनुष्य घडा लेकर लोगों को पानी पिलाने के लिये जाता हुआ सा दिखाई देता है। कुम्भ राशि मे कोई ग्रह उच्च का नही होता। कुम्भ राशि का रंग– वभ्रुव, जाति–शूद्र, धातु–सम, स्वभाव– स्थिर, लिङ्ग–पुरुष, प्रकृति– जलचर, संज्ञा– शीर्षोदय, बली– दिनबली, अंग– जंघाद्वय, प्लवत्व/दिशा– पश्चिम, आकृति– ह्रस्व, स्वभाव– क्रूर, निवास– शिल्पगृह, स्थान– भाण्ड पार्श्वे है।

कलश या घट को कुम्भ कहा जाता है। सनातन धर्म के कर्मकाण्ड में कुम्भ या कलश लोकमंगल का पर्याय है ।इस कुम्भ के अंतर्गत ब्रह्मा, विष्णु , महेश, षोडश मातृकाएं, ऋग्वेद, यजुर्वेद , सामवेद, अथर्ववेद, गायत्री, सावित्री,शान्ति, पुष्टिकरी, गंगा,यमुना ,गोदावरी, सारस्वती,नर्मदा, सिंधु ,कावेरी और सभी सागर इसमें

समाहित हैं। भारत के मन्दिरों के शीर्ष भाग को भी कुम्भ कहा जाता है। संगीत शास्त्र का एक राग है कुम्भ। आयुर्वेद में शिर या मस्तक को कुम्भ कहा जाता है।

वेद यज्ञ में अभिप्रवृत्त हैं । यज्ञ काल (समय) पर आधारित है। समय के अध्ययन के विज्ञान को ज्योतिष कहा जाता है। कुम्भ पर्व का निर्णय अलग अलग ग्रहीय स्थिति से होता है। प्रयाग में प्रत्येक 12वे वर्ष मनाया जाने वाला कुम्भ पर्व सनातन धर्म ही नही समग्र मानव जाति का श्रेष्ठतम समागम या मेला है। समुद्र मंथन की कथा महाभारत के आदि पर्व 18–19 में उल्लिखित है । भागवत पुराण 8/8/6, पद्म पुराण सृष्टि खण्ड 2/1/4, अग्नि पुराण अवतार खण्ड 1/2, विष्णु पुराण अध्याय 9 में, स्कन्द पुराण 4/1/5 और शिव पुराण 3/21 में समुद्र मंथन की कथा का उल्लेख है।

भारतीय ऋषि परम्परा पुराणों की कथाओं के माध्यम से बहुत गंभीर जीवन दर्शन का संदेश देती है, समुद्र मंथन की कथा तो प्रतीक हैं, इस कथा के पीछे बहुत गहरा तत्त्वदर्शन छिपा है, यह जो समुद्र है वह काम क्रोध मद लोभ मोह मात्सर्य से युक्त मनुष्य का प्रतीक है, मानव शरीर में रहने वाली तमोगुणी प्रवृत्तियाँ ही असुर हैं, मनुष्य के अंदर की सतोगुण प्रवृत्तियाँ देवता हैं, इस प्रकार मनुष्य के अंदर सतोगुण और तमोगुण का संग्राम चलता रहता है, देवासुर संग्राम इन्ही सतोगुणी और तमोगुणी प्रवृत्तियों अंतर्विरोध है, अमृतकुम्भ तत्त्वज्ञान का प्रतीक है, समुद्रमंथन से निकले धन्वंतरि कुम्भ महापर्व में आये तत्त्वदर्शी ऋषि मुनि के प्रतीक हैं, समुद्रमंथन के १४ रत्न पंचज्ञानेंद्रिय (आँख,कान,नाक,त्वचा और जिह्वा) पंचकर्मेंद्रिय (हाथ, पैर, मुख, गुदा और लिंग) मन ,बुद्धि ,चित्त और अहंकार के प्रतीक हैं । कुम्भ में कल्पवास करने वाले कठोर अनुशासन के साथ सांसारिक भोगों का त्याग करते हैं। जैसे परमात्मा में यह संसार उत्पन्न होता है, बढ़ता होता है और विनष्ट होता है वैसे ही कुम्भपर्व में नदी तट पर यह महापर्व उत्पन्न होता है बढ़ता है और समाप्त हो जाता है । कथा के अनुसार समुद्र मंथन में अमृत कलश निकलते ही देवताओ और दैत्यों में छीना झपटी मच गई। अवसर पाकर देवराज इंद्र के पुत्र जयन्त अमृत कलश लेकर भागे। दैत्यों ने उनका पीछा किया । जयंत के भागते समय अमृत कुम्भ की कुछ बून्दे 12 स्थानों पर गिरीं ।

'जायन्ते कुम्भ पर्वाणि तथा द्वादश संख्यया, तत्राधनन्तमे नृणां चत्वारो भुवि भारते, अष्टौ लोकान्तरे प्रोक्ता देवैर्गम्या न चौतरेरू'

जिनमे चार स्थान पृथ्वी लोक पर और 8 स्थान स्वर्गादि लोको पर स्थित हैं। पृथ्वी पर यह 4 स्थान हरिद्वार, प्रयाग , नासिक और उज्जैन में है अमृत कलश की बून्दे जिस समय (मुहूर्त) में जिस स्थान पर गिरी उस स्थान पर वहां कुम्भ पर्व मनाने की परंपरा विकसित हुई। पृथ्वी पर स्थित चार कुम्भ मेलो की जानकारी सभी मनुष्यों को हो जाती है शेष 8 स्थानों पर कुम्भ पर्व जानकारी केवल देवताओं और दिव्य प्राणियों को ही हो पाती है।

अमृत कुम्भ की बून्दें जिस मुहूर्त में प्रयाग में गिरी उस समय गुरु बृश्चिक राशि मे , सूर्य और चंद्रमा मकर राशि मे थे। जिस समय हरिद्वार में अमृत बिंदु गिरे उस समय गुरु कुम्भ राशि मे और सूर्य चंद्रमा मेष राशि पर थे। जिस मुहूर्त में उज्जैन में अमृतबिंदु गिरा उस समय गुरु सिंह राशि मे ,सूर्य मेष राशि मे और चंद्रमा तुला राशि मे थे।जब नासिक में अमृत बिंदु गिरा उस मुहूर्त मे गुरु सूर्य और चंद्रमा सिंह राशि मे थे। तब से इन्ही ग्रहीय स्थितियों में कुम्भ पर्व मनाने की परम्परा चल पड़ी।

पद्मिनी नायके मेषे कुम्भ राशि गते गुरौ, गंगाद्वारे भवेद योगः कुम्भनामा यठोत्तमम्।
माघे वृषगते जीवे मकरे चंद्रभास्करे, अमायांच तदायोगः कुम्भाख्यास्तीर्थनायके ।
मेष राशिगते सूर्ये सिंह राशौ वृहस्पतौ, उज्जयिन्यां भवेद कुंभः सदामुक्तिः प्रदायकः ।
सिंह राशिगते सूर्ये सिंह राशौ बृहस्पतौ, गोदावर्यां भवेत् कुम्भो जायते खलु मुक्तिदरू।।

प्रयाग कुम्भ पर्व का प्रमुख स्नान माघ मास की अमावस्या को होता है। इसे मौनी अमावस्या भी कहा जाता है। गोस्वामी तुलसीदास ने राम चरितमानस में प्रतिवर्ष होने वाले कुम्भ मेले का वर्णन किया है–

माघ मकर गति रवि जब होई, तीरथ पतिहि आव सब कोई।
देव दनुज किन्नर नर श्रेणी, सादर मज्जहिं सकल त्रिवेणी।[5]

अर्थात माघ मास में जब सूर्य मकर राशि में प्रवेश करते हैं तो तीर्थराज प्रयाग में सब मनुष्य आते हैं , इसमे देवता दानव, किन्नर, नर, श्रेणी सब आकर आदरपूर्वक गंगा यमुना और अव्यक्त सरस्वती की त्रिवेणी में स्नान करते हैं।

महाभारत में प्रयाग में गंगा यमुना और अव्यक्त सरस्वती में स्नान की बड़ी महिमा उल्लिखित है–

तत्राभिषेकं यः कुर्यात् संगमे लोकविश्रुते, पुण्यं स फलमवाप्नोति राजसूयाश्वमेधयोः।।[6]

अर्थात उस प्रयाग के प्रसिद्ध संगम में जो स्नान करते हैं उन्हें राजसूय और अश्वमेध यज्ञ के समान पुण्य की प्राप्ति होती है। स्नान का सर्वोत्तम समय अरुणोदयकाल (ब्रह्म मुहूर्त)होता है। अरुणोदय काल मे भी जिस समय तारे दिखाई पड़ते हों वह सर्वोत्तम मुहूर्त होता है।

उत्तमं तु सनक्षत्रं लुप्ततारं तु मध्यमम्।
सवितुर्युदिते भूप ततो हीनं प्रकीर्तितम् ।।

नारद पुराण में सूर्योदयान्तर स्नान का भी महात्म्य उल्लिखित है।माघ स्नान करके तिल और शर्करा के दान का उल्लेख है जिसमे तीन भाग तिल और चौथाई भाग शर्करा होनी चाहिए।

अहन्यहनि दातव्यास्तिलारू शर्कर्यान्वितारू।
त्रिभागस्तु तिलानां हि चतुर्थः शर्कर्यान्वितः।।

आगामी कुम्भ मुहूर्त निम्नवत हैं– प्रयाग में कुम्भ पर्व का प्रमुख मुहूर्त माघकृष्ण अमावस्या को होता है।

यह मुहूर्त 29 जनवरी 2025, 16 जनवरी 2037, 2 फरवरी 2049, 2 फरवरी 2060, 20 जनवरी 2072, 6 फरवरी 2084, 25 जनवरी 2096 , 11 फरवरी 2108 और 30 जनवरी 2120 ।

प्रयाग अर्धकुम्भ का मुहूर्त 4 फरवरी 2019, 23 जनवरी 2031, 21 जनवरी 2042, 7 फरवरी 2054, 25 जनवरी 2066, 12 फरवरी 2078, 30 जनवरी 2090 , 19 जनवरी 2102 , 5 फरवरी 2114 और 23 जनवरी 2126।

उज्जैन का कुम्भस्नान वैशाख शुक्ल पूर्णिमा को होता है कभी कभी चौत्र शुक्ल पूर्णिमा को भी होता है। यह मुहूर्त 8 मई 2028 और 27 अप्रैल 2040, 26 अप्रैल 2051, 12 मई 2063, 30 अप्रैल 2075, 18 अप्रैल 2087, 4 मई 2099, 23 अप्रैल 2111, 10 मई 2123, 8 मई 2134, 26 मई 2146 और 13 मई 2158

हरिद्वार का कुम्भस्नान का मुहूर्त वैशाख शुक्ल पूर्णिमा को होता है।

यह मुहूर्त 11 मई 2021, 29 अप्रैल 2033 ,11 अप्रैल 2045, 3 मई 2057, 21 अप्रैल 2069, 8 मई 2081, 25 अप्रैल 2093, 25 अप्रैल 2104, 12 मई 2116, 29 मई 2128, 17 अप्रैल 2140 और 4 मई 2152 ।

हरिद्वार के अर्द्धकुम्भ का पर्व वैशाख की अमावस्या को होता है

यह मुहूर्त 24 अप्रैल 2028, 11 मई 2040, 10 मई 2051, 28 अप्रैल 2063, 11 मई 2040, 10 मई 2051, 28 अप्रैल 2063, 15 अप्रैल 2075, 2 मई 2087, 20 अप्रैल 2099, 7 मई 2111, 26 अप्रैल 2123, 24 अप्रैल 2134, 10 मई 2146 और 28 अप्रैल 2158 ।

नासिक कुंभ स्नान भाद्रपद मास की अमावस्या को पड़ता है।

यह मुहूर्त 31 अगस्त 2027 , 19 अगस्त 2039, 5 सितम्बर 2051, 24 अगस्त 2063, 10 सितम्बर 2075, 28 अगस्त 2087, 26 अगस्त 2098, 14 सितम्बर 2110, 21 अगस्त 2122, 18 अगस्त 2134, 6 सितम्बर 2146 और 24 अगस्त 2158।

इस कुम्भ पर्व में चार मठ– श्रृंगेरी (रामेश्वरम), जोशी (वादरिकाश्रम), गोवर्धन (जगन्नाथ पुरी) और शारदा मठ (द्वारिका) के सन्यासियों को दीक्षा दी जाती है। दसनामी सन्यासी सम्प्रदाय – गिरि, पुरी, भारती, तीर्थ, वन, अरण्य, पर्वत, आश्रम, सागर, सरस्वती के सभी संत कुम्भ में आते है। तेरह अखाड़े – निरंजनी, जूना, महानिर्वाणी, आनंद, अग्नि, अटल, आह्वान, निर्वाण, अनी, दिगम्बर , निर्मोही, बड़ा पंचायती उदासीन, नया उदासीन अखाड़ा और निर्मल अखाड़े के संता यहां अपने आध्यात्मिक अनुभव प्रदान करने आते हैं । कुम्भ मेले में पहले अखाड़े के सन्यासी स्नान करते हैं उसके बाद श्रद्धालुजन तीर्थ स्नानकर पुण्यलाभ प्राप्त करते हैं।

प्रयाग शताध्यायी में पांचवे कुम्भस्थल कुम्भकोणम (चेन्नई) का उल्लेख है यहां हर 12 वर्ष पर महामखम उत्सव मनाया जाता है।[10]

भारत मे कुम्भकोणम, बृन्दावन और जबलपुर में नर्मदा तट पर भी कुंभपर्व मनाने की परम्परा है ,किन्तु इन स्थलों को प्रयाग ,हरिद्वार , नासिक और उज्जैन जैसी मान्यता नही मिली। यूनेस्को के अधीनस्थ संगठन ष इण्टर गवर्नमेंटल कमेटी फार द कल्चरल हेरिटेजष ने दक्षिण कोरिया के जेजू में हुए अपने अपने 12वें सत्र में दिसंबर 2017 में कुम्भ मेले को 'मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर की प्रतिनिधि सूची' में शामिल किया गया है।

इस प्रकार कुम्भ मानव की चेतना को जाग्रत करने का महापर्व है, प्रयाग हरिद्वार नासिक और उज्जैन का कुम्भ सनातन संस्कृति की अद्भुत उपलब्धि है जिसे भारत ही नही सारा संसार स्वीकार कर रहा है। भारत के बाहर से अन्य अनेक धर्म, जाति, और देश के लोग आकर इसको आश्चर्य से देखते हैं। भौतिकवादी

ISSN: 2250-1894
Vol.-15, No.-IV, Issus-60
Year: Jan-Mar 2025

विचारधारा के लोगो के लिए कुम्भ पर्व कौतूहल का विषय है, आध्यात्मिक विचारधारा के लोग इसके माध्यम से संसार सागर को पार करने का मार्ग खोजते हैं।

गीताप्रेस गोरखपुर से प्रकाशित पुस्तक महाकुंभ–पर्व में कुम्भ पर्व के आध्यात्मिक रहस्य को उजागर करते हुए कहा गया है कि –

कुम्भ–पर्वके आध्यात्मिक रहस्यके विषयमें विचार करनेपर ज्ञात होता है कि जो गृहस्थ मनुष्य श्पंचाग्नि विद विजानते हैं तथा जो वानप्रस्थी, संन्यासी या नैष्ठिक ब्रह्मचारिगण सांसारिक विषय–वासनाओंसे विरक्त होकर श्रद्धापूर्वक तप तथा सत्य–पालनादिका आचरण करते हैं, वे उत्तरायण–मार्गसे अर्थात् अर्चिमार्गसे सूर्यलोक होते हुए श्ब्रह्मलोकश जाते हैं। वहाँ अनेक कल्पतक निवास कर पुनः जिस मार्गसे वे गये थे उसी मार्गसे लौटकर इन्द्रादि लोकोंमें ही रहते हैं और वे भूलोकमें नहीं आते। इन्द्रादि लोकोंमें रहते हुए सौभाग्यवश गुरूपदेशद्वारा ज्ञानप्राप्ति हो जानेके कारण मोक्षकी प्राप्ति हो जाती है, जिससे वे इस संसारमें नहीं आते हैं, प्रत्युत ब्रह्ममें ही लीन हो जाते हैं और जो साधारण गृहस्थजन ग्राममें ही रहते हुए इष्ट – अग्निहोत्रादि वैदिक कर्म तथा पूर्त–वापी, कूप–तड़ागादि प्रतिष्ठा तथा दान, यज्ञ आदिका आचरण करते हैं, वे दक्षिणायन मार्गसे अर्थात् धूम–मार्गसे श्चन्द्रलोकश जाते हैं। वहाँ वे पुण्यक्षयपर्यन्त निवास कर फिर बादल आदि बनकर इस पृथ्वीपर औषध, तृण तथा वनस्पतिरूपमें वृष्टिद्वारा पैदा होते हैं। जो मनुष्य श्पंचाग्नि विद्याश आदिसे तथा अग्निहोत्र, वापी, कूप, तड़ागादि प्रतिष्ठा, दान, यज्ञ आदिसे भी वंचित रहते हैं, वे कीट, पतंग आदिकी योनियोंमें जाते हैं और बार–बार जन्म–मरणजन्य क्लेशको भोगते हैं। इस प्रकार मरनेके बाद मनुष्योंकी उत्तम, मध्यम तथा अधम–ये तीन गतियाँ उपनिषदोंमें वर्णित हैं। जो मनुष्य मरणसे पहले ही गुरूपदेशद्वारा तत्त्वज्ञान प्राप्त कर लेते हैं, उनकी मरनेके समय प्राणोंके साथ आत्मा पूर्वोक्त मार्गोमेंसे किसी भी मार्गका अनुसरण नहीं करती, अपितु हृदयमें ही (ब्रह्ममें) लीन हो जाती है। यह सर्वोत्तम गति ज्ञानियोंके लिये उपनिषदोंमें बतलायी गयी है। वस्तुतः पूर्णकुम्भ तथा अर्धकुम्भ–पर्व मनानेका रहस्य यह है कि हमलोग इस पर्वपर दूर–दूरसे अनेक स्थानोंसे हरिद्वार, प्रयाग आदि पवित्र तीर्थोंमें आकर गंगास्नानसे पवित्र होकर श्रेष्ठ विद्वानोंके उपदेशद्वारा ज्ञान प्राप्त करें तथा तप, सत्य, दान, यज्ञ आदि शुभ कर्मोंका यथाधिकार, यथारुचि आचरण करें, जिससे मृत्युके बाद हमें सर्वोत्तम, उत्तम या मध्यम गति प्राप्त हो और अधम गति कदापि न मिले।[11]

वेदाचार्य पण्डित श्री वेणीराम शर्मा आचार्य ने अपनी पुस्तक कुम्भपर्व–माहात्म्य में कुम्भ पर्व का उद्देश्य स्पष्ट करते हुआ लिखा है –

हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक इन चार कुम्भ–पर्व के निर्णीत स्थानों में कुम्भ–योग के समय तत्तत्सम्प्रदाय सम्मानित साधु–महात्माओं के समवाय द्वारा संसार के सर्वविध कष्टों के निवृत्यर्थ देश, समाज, राष्ट्र, और धर्म आदि समस्त विश्व के कल्याण–सम्पादनार्थ निष्काम भावनापुरस्सर वेदादि शास्त्रानुकूल अमूल्य दिव्य उपदेशों से जगत्कल्याण करना ही 'कुम्भ–पर्व' का महान् उद्देश्य है।[12]

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. यजुर्वेद संहिता 19/47.
2. अथर्ववेद 19/53/3.
3. पारस्कर गृह्य सूत्र 1/14/5.
4. मनुस्मृति 11/134.
5. अरुण स्मृति 1/38.
6. नाट्यशास्त्र 3/72.
7. नाट्यशास्त्र 4/2.
8. रामचरितमानस/ बालकाण्ड 43/3
9. महाभारत वनपर्व 85/81.
10. प्रयाग शताध्यायी– पूर्वार्ध अध्याय 3
11. महाकुम्भ–पर्व पृष्ठ 14 प्रकाशक गीताप्रेस गोरखपुर
12. कुम्भपर्व– माहात्म्य पृष्ठ 10

*****